स्व-अस्तित्व की स्वीकार्यता ही जीवन की सम्पूर्णता ....

जीवन का नियम बहुत विरोधाभासी है, पैराडॉक्सिकल है। उल्टे परिणाम आते हैं। जैसे कोई व्यक्ति अपनी छाया से भागना चाहे, तो जितना भागेगा, उतना ही पाएगा कि छाया भी उसके साथ भाग रही है। भागकर छाया से बचने का कोई उपाय नहीं है। रुक जाए कोई, तो छाया भी रुक जाती है। भागे कोई तो छाया भी उतनी ही तेजी से पीछा करती है। छाया से छूटने का एक ही उपाय है, यह जान लेना कि वह छाया है, वह है ही नहीं। और तब है या नहीं, कोई अंतर नहीं पड़ता। छाया से बचने का भागना मार्ग नहीं है, छाया के प्रति जागना मार्ग है। और जब कोई जान लेता है कि छाया मात्र छाया है, तो उससे बचने की चेष्टा भी छोड़ देता है। क्योंकि जो है ही नहीं, उससे बचना ही क्या? और जैसे ही कोई बचने की चेष्टा छोड़ देता है, बच जाता है-यह विरोधाभास है।

जब तक बचना चाहते हैं, बच नहीं सकेंगे और जब बचना नहीं चाहेंगे तब बच जाएंगे। जैसे नदी में कोई जीवित आदमी डूब जाता है, मुर्दा तैर आता है, बड़ी उल्टी बात मालूम पड़ती है। नदी के नियम बड़े बेबूझ मालूम पड़ते हैं। जिंदा आदमी को बचना चाहिए, मुर्दा डूब भी जाए तो हर्ज नहीं है। लेकिन जिंदा आदमी डूब जाता है और मुर्दा बच जाता है। शायद मुर्दा आदमी नदी के नियम को ज्यादा ठीक से समझता है। उसे पता है कि नदी के साथ क्या करना है और जिंदा आदमी जो भी करता है, झंझट में पड़ता है।

-ब्र.कु.गंगाधर

क्या पता है मुर्दे आदमी को जो जिंदा को पता नहीं है? मुर्दे को एक कला आती है, वह नदी के हाथों में अपने को छोड़ देता है, नदी जो करना चाहे करे। फिर नदी नहीं डुबाती, फिर नदी तैराने लगती है। जिंदा आदमी नदी से लड़ता है, लड़कर ही टूटता है और डूबता है। नदी नहीं डुबाती, आदमी खुद ही लड़कर अपने को नष्ट कर लेता है और डूब जाता है। नदी तो उबारती है, क्योंकि मुर्दे को उबार देती है। अगर जिंदा आदमी भी मुर्दे की भांति नदी के साथ व्यवहार करे तो नदी उसे डुबोने में असमर्थ है। लेकिन यह अति कठिन है।

जिंदा आदमी मुर्दे की तरह व्यवहार करे-वही सन्यासी का लक्षण है। और जिस दिन कोई आदमी जीते जी मुर्दे की भांति व्यवहार करने लगते हैं, उसे परम जीवन उपलब्ध हो जाता है और जो जिंदगी को पकड़ने और बचाने की कोशिश करते हैं, उनके हाथ से जिंदगी छूटती चली जाती है।

जीसस ने कहा है, बचाओगे तुम तो खो दोगे और अगर तुम खोने को राज़ी हो, तो तुम्हें पूरा जीवन मिल जाएगा, परम जीवन मिल जाएगा। ये सूत्र इस विरोधाभास की तरफ ही इंगित करते हैं।

पहला सूत्र है, जीवन की तृष्णा को दूर करो। लेकिन क्यों? जीवन की तृष्णा को क्यों करें दूर? इसीलिए, ताकि जीवन तुम्हें मिल सके, ताकि तुम पा सको, जान सको, जी सको-क्या है जीवन। जिसके मन में तृष्णा है जीवन की, वे जीवन को जानने से वंचित रह जाते हैं। उल्टा है। होना तो यही चाहिए कि जो जीवन की तृष्णा रखते हैं, उन्हें जीवन मिले। लेकिन उन्हें नहीं मिलता, उन्हें मिलती है केवल मौत। वे केवल मरते हैं। और मरने में ही उनका समय व्यतीत होता है लेकिन जो व्यक्ति जीवन की तृष्णा को छोड़ देता है, जो कह देता है मुझे चिंता नहीं जीवन की और न कोई कामना है, अगर मौत आती हो तो अभी आ जाए, मैं राज़ी हूं-उस आदमी को अमृत के दर्शन हो जाते हैं। उल्टा है। मगर उल्टा होने का कारण है। जब बहुत घने काले बादल घिरते हैं आकाश में तो ही बिजली दिखाई पड़ती है। अंधेरे की पृष्ठभूमि होती है कालेपन की तो बिजली भी उभरकर प्रकट होती है। बिजली को देखना हो तो काले बादल होने ज़रूरी हैं।

जिन्हें जीवन को देखना है, उन्हें मृत्यु की पृष्ठभूमि को स्वीकार कर लेना जरूरी है। जो मृत्यु से राज़ी हो जाता है, उसके भीतर की जीवन चिंगारी अधिक प्रकट होकर दिखाई पड़ने लगती है। जो मृत्यु से डरता है, भयभीत होता है, जो मृत्यु से बचता है, उसे जीवन की चिंगारी दिखाई नहीं पड़ती। मृत्यु के स्वीकार के साथ ही अमृत की उपलब्धि है और हम सब मरने से डरते हैं। ऐसा नहीं है कि इस डर से हम मरने से बच जाते हैं। मृत्यु तो आती ही है, लेकिन इस डर के कारण वह जो जीवन हमारे निकट था, उसे हम देखने से वंचित रह जाते हैं। हम भयभीत होते हैं मृत्यु से और जीवन हमारे पास से गुजर जाता है। हमारी आँखें लगी रहती हैं मृत्यु पर और जीवन हमारे निकट से गुजरता है।

जीवन तो अभी और यहीं है। जीवन को पाने के लिए कहीं भविष्य में जाने की कोई जरूरत नहीं है। जीवन तो मिला हुआ ही है, लेकिन मन आपका या तो पीछे डोलता रहता है, उन क्षणों में जो जा चुके हैं और या फिर भविष्य की चिंताओं में, भविष्य की कल्पनाओं में और योजनाओं में भटकता रहता है। उन क्षणों में जो अभी आए नहीं हैं। और इस भांति जीवन की पतली धारा आपके पास से बहती चली जाती है और आप उससे अपरिचित ही रह जाते हैं। उसमें कभी स्नान भी नहीं हो पाता। उससे आपका कभी कोई संबंध नहीं जुड़ पाता।

जीवन की तृष्णा को दूर करो।क्यों? इसलिए कि जीवन तुम्हें उपलब्ध हो सके।

शेष पेज 11 पर

वृत्ति स्वच्छ रखने से औरों के प्रभाव से मुक्त होंगे

दीपावली में पुराना खत्म करना होता है, नया खाता शुरू करते हैं। दीपावली मनाई ही इसलिए जाती है, पुराने की सफाई करते हैं और नया शुरू करते हैं। इसमें सब खुशमिज़ाज होते हैं। अब साइंस इतना कमाल कर रही है, साइलेंस क्या कर रही है? याद साइलेंस से है, सेवा भी साइलेंस से है। सेवाओं ने ही अनेकों की जीवन यात्रा को सफल किया है। हर एक को देखती हूँ कोई निमित्त बनता है, सबके उमंग-उत्साह में सफलता होती है इसलिए विचार की बात नहीं है। परन्तु क्या है थोड़ा व्यस्त हो जाते हैं सेवा में, सहयोग है सबका, मैं अकेली नहीं करती हूँ। स्नेह और सहयोग से जो दिन पास होते हैं, खुशी बहुत होती है।

चित्त क्या है? चित्त वृत्ति है। पर वृत्ति साफ हो, यह है हमारा पर्सनल पुरुषार्थ, इसमें कोई साथ नहीं देगा। अगर मैं बातों में जाऊंगी, सेवा भी करुंगी पर यह जो मेरा मिसिंग होगा, तो कौन मदद करेगा? बाबा भी मदद नहीं करेगा। बाबा कहता है, मैं रोज़ मुरली चलाता हूँ, रोज़ सुनाता हूँ तो मैं रोज़ की मुरली सिर्फ पढ़ती नहीं हूँ, बाबा का चेहरा याद आता है, सुबह को कैसे मुरली चलाने के पहले...चलो बच्ची बाबा को लेके आता हूँ। जब आता है मुरली चलाता है, मुरली में यह समझाता है, कौन समझा रहा है, किसके द्वारा समझा रहा है, ऐसी हमारी वृत्ति हो। बाबा मुरली का सार बहुत करके रोज़ हमारी बुद्धि में बिठाता है। कौन समझा रहा है, कैसे समझा रहा है? वो कैसे बतावे? इसके द्वारा बताता है। बाबा जो समझा रहा है, ऐसे ही बच्चे भी औरों को समझावें। जो मैं सुनाता हूँ, उसे अच्छी तरह से जीवन में ले आवें। अन्दर आत्मा देह सहित देह के सब सम्बन्ध से न्यारी बन करके ईश्वरीय स्नेह सुख शान्ति सम्पन्न बन जाए। अगर मेरे मन में, दिल में कोई बात की फीलिंग है, भले पुरानी बात है, वो इकट्ठी हुई है जिसके कारण मन में वो ख्याल चलते हैं, वृत्ति में बैठ जाते हैं। जब भी बात करेंगे, वो पुरानी-पुरानी 20 साल पहले की बात, 30 साल पहले की बात ले करके आज दिन तक यही हाल है। तो वृत्ति क्या है? वृत्ति में यही स्मृति है ना। वृत्ति-शांत, शुद्ध, सच्चाई की गहराई में जा रही है। मन को शांत करो। बालक हूँ, तो किसका हूँ? जो बाबा ने ज्ञान दिया है वो आत्मा में रोज़ नई-नई बातें भरता रहता है, उसका मैं मालिक हूँ। वही बात औरों को समझाने से कदर बढ़ता है, बाबा कितना अच्छा बोलता है। तो वृत्ति के द्वारा वो स्मृति बन गई। मरुं तो स्मृति में मरुं, जीऊं तो एक की स्मृति में जीऊं।

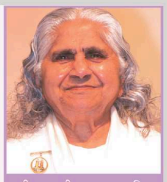
दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

वृत्ति स्मृति का कनेक्शन है बुद्धि से। इसमें सूक्ष्म ईगो न हो, यह पुरुषार्थ करना ज़रूरी है। ईगो बहुत नुकसानकारक है। स्वमान में रहने नहीं देता, सम्मान देने नहीं देता। स्वमान में रहना, सम्मान देना, यह बाबा का फरमान है। कोई भी आत्मा ऐसी न हो जिसके लिए मेरे अन्दर में सम्मान न हो। अगर नहीं है माना मैं स्वमान में नहीं हूँ, यह चेकिंग करना और अपने आपको चेंज करना। इसके लिए टाइम है, और बातों के लिए मेरे पास टाइम नहीं है। वृत्ति हमारी ऐसी हो जो और आत्माओं को खींचे। वायुमण्डल को ऐसा पॉवरफुल बनायें क्योंकि जैसी बातें सोचते हैं, करते हैं ऐसा वायुमण्डल बनता है। वृत्ति, वायुमण्डल फिर दृष्टि भी अच्छी हो जाती है। अगर वृत्ति में कोई और बात है तो दृष्टि भी जैसी कि तैसी होती है। जो वृत्ति में है वही स्वप्न में भी होता है।

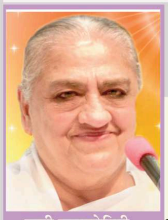
दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

परिवर्तन भूमि में दृढ़ संकल्प करनें से मदद मिलेगी

बाबा का हर एक बच्चा अपने घर मधुबन में पहुँच गया है और यह मधुबन कितनी आत्माओं को रिफ्रेश करता है, वो तो अनुभव आप सबने अपने अपने अनुसार किया होगा। मधुबन में आते ही सभी ने अनुभव किया होगा कि मधुबन में बाबा को याद करना नहीं पड़ता लेकिन चलते-फिरते स्वत: ही बाबा की याद आती है। मधुबन निरंतर योग का अनुभव कराता है। तो आप सबने भी ऐसा अनुभव किया ही होगा क्योंकि सबकी नज़रों में शक्लों में बाबा की याद समाई हुई है। बाबा कहते ही कितना प्यार आता है क्योंकि बाबा ने हम सबको क्या से क्या बना दिया है! साधारण आत्माओं को विश्व का मालिक बना दिया। यह तो सभी जानते ही हैं कि अभी बाबा के दिल के अमूल्य रत्न बन गए और भविष्य में फिर ताजधारी बनके राज्य-अधिकारी बनेंगे। तो सबके दिल में सबके नयनों से मेरा बाबा, मीठा बाबा दिखाई दे रहा है। भले इतने सब हैं लेकिन हरेक के मन से मेरा बाबा ही निकलता है। और बाबा में जितना मेरापन लगायेंगे उतना सहज याद और बाप समान बन जायेंगे क्योंकि मेरा कभी भूलता नहीं है। कितनी बारी बाबा कहता है- बॉडी कॉन्सेस से सोल कॉन्सेस हो जाओ फिर भी बॉडी कॉन्सेस हो जाते हैं। लेकिन बाबा की याद में जब बैठते हैं तो बाबा कहा और अनुभव हुआ। दिलाराम हमारे दिल को जानते हैं और हरेक ने बाबा को अपने दिल में बिठा लिया है। सभी के मुख से मेरा बाबा निकलता है। सिर्फ बाबा नहीं कहते लेकिन 'मेरा बाबा है'', तो मेरा भूलना तो बहुत मुश्किल है। अभी सिर्फ बाबा कहते, यह जो देह है उसका ज्ञान तो मिला है, इसको भूल जाओ। फिर भी कहते हैं बाबा बीच-बीच में देहभान आ जाता है। तो बाबा को याद करना वास्तव में कोई मेहनत नहीं है। मेरा है ना, देखो, शरीर मेरा है तो भूलता कम है। समय प्रति समय मनुष्य तन है, उसमें बुद्धि चली जाती है, ऐसे ही मेरा बाबा है, तो मेरी चीज़ भी स्मृति आ गई यह तो मेरा बाबा है। और मेरा कह दिया मान लिया, अनुभव कर लिया तो मेरे को भूलना बहुत मुश्किल है।

तो अभी सभी के दिल में कौन? मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा और यही दिल में बिठाने से जो बाबा हमसे चाहता है, बच्चे मेरे जैसे बन जायें, ऐसे ही सभी बाबा के समान, बाबा ने जो कहा वो हमने किया। एक एक शब्द बाबा का अपने जीवन में समा करके हम भी बाबा के समान बनेंगे ज़रूर। बन भी रहे हैं और बनेंगे भी क्योंकि बाबा से प्यार है ना। तो जिससे प्यार होता है उसको भूलना मुश्किल होता है, याद करना मुश्किल नहीं होता है। तो बाबा को हम दिल से प्यार करते हैं, बाबा से हम सबका दिल का 100 परसेन्ट प्यार है। जिससे कुछ मिले उससे ही तो प्यार होता है। तो बाबा ने हमें क्या क्या दे दिया, हमें ये मालूम ही नहीं था कि इतना हमको मिलेगा लेकिन बाबा ने इतना दिया है जो हम सभी मालामाल हो गये हैं। तो बाबा के प्यार ने हम सबको भी सबका प्यारा बना दिया है। सबके प्यारे हो गये हैं ना! किसी से वैर विरोध नहीं है। बाबा का साथ बहुत प्यारा है। एक बाबा शब्द में भी बहुत प्यार है। बाबा ने हम सबको इतना प्यार दिया है, इतनी मेहनत की है एक एक बच्चे के ऊपर जो बच्चा कभी भूल नहीं सकता है। बाबा ने जो प्यार दिया है हमको, इतना अच्छा बनाया है वो कभी भूल सकता है? नहीं भूल सकता है, यही प्यार हमको दो युग बहुत आनंद और प्रेम दिलायेगा। लेकिन उसके पहले अभी जो बाबा चाहता है वो करना है, बस। जो बाबा ने मुरली में कहा वो करने से बाबा जो चाहता है वो चाहना पूरी होती है। और हम भी बहुत खुश होते हैं। जब रात्रि को देखते हैं, जो बाबा ने कहा वही हमने सारा दिन किया तो अपने ऊपर भी बहुत खुशी होती है। अगर नहीं करते हैं तो शक्ल थोड़ी बदलती है। लेकिन मधुबन में न चाहते हुए भी सबका योग लग जाता है क्योंकि वायब्रेशन ऐसा है, जो भी यहाँ आते हैं उन सभी के मन में मीठा बाबा, प्यारा बाबा, बाबा ही बाबा होता है। और बाबा जो मुरली चलाते हैं, वो मुरली हमारे लिए बहुत अच्छा साधन है, बाबा ने कहा और हमने सारा दिन किया। हर मुरली में चारो ही सबजेक्ट्स होते हैं, उन चारो सबजेक्ट्स को ध्यान में रख करके हम उसी प्रमाण अपने आपको चलायें तो बहुत इज़ी है, मेहनत नहीं है।